ऐसा कहा जाता है कि उस नीति से शिक्षा के स्तर में ह्रास हुआ है, जो वास्तविकता से परे है। डाक्टर जाकिर हुसैन सैन्टर फार एजुकेशनल स्टडीज, जे०एन०यू०, के एक अध्ययन के परिणाम-स्वरूप विदित हुआ है कि इन पिछड़े वर्गों से आये छात्रों का अध्ययन कार्य एवं उनकी क्षमता कहीं अच्छी रही है। प्रवेश की प्रगतिशील नीति छात्रों, शिक्षकों तथा विश्वविद्यालीय समितियों के पर्याप्त विचार-विमर्श के पश्चात् निर्धारित की गई थी, परन्तु उसे समाप्त करते समय विस्तृत विचार-विमर्श नहीं किया गया।

मैं माननीया शिक्षा मंत्री से निवेदन करूंगा कि जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में प्रवेश की पूर्व नीति को बरकरार रखा जाए। उस नीति के क्रियान्वयन का अध्ययन करने के लिए एक समिति जिसमें छात्रों, शिक्षकों एवं विश्वविद्यालय की समितियों का प्रतिनिधित्व हो, बनाई जाए, जो नीति का विस्तृत वैज्ञानिक अध्ययन करके सुझाव दे।

(vi) Stagnation in promotion avenues of engineers in Bokaro Steel Plant

*SHRI RASA BEHARI BEHERA (Kalahandi) : The future of 983 engineers in the project wing of the Bokaro Steel Plant hangs in a balance following "total stagnation" in their promotional avenues. The promotion of the project engineers of the B.S.P. was held up for more than nine years in one grade while they still handled project works valued at Rs. 1200 crores.

The project engineers have already taken up the expansion of the BSP, which is to be completed by 1986, but it is regrettable that SAIL management has not planned for their future deployment.

In view of the above, I suggest that the Government should set up a central project division immediately for the Steel Authority of India Limited to pool them. The Centre and SAIL should also deploy them in other expanding organisations like the NTPC to open up job opportunities for them. I request the Government of India to take immediate steps in the above matter.

(vii) Increasing number of accidents at Gandhi Setu, Patna

श्री राम विलास पासवान : (हाजीपुर) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपका एवं सदन का ध्यान 1 फरवरी को घटी अत्यन्त ही हृदय विदारक घटना की ओर आकृष्ट करना चाहता हूं। 1 फरवरी को 9 बजे सबेरे महात्मा गांधी सेतु (पटना-हाजीपुर गंगापुल) पर एक मिनी बस रेलिंग तोड़ कर पुल के नीचे चली गई जिसमें 49 व्यक्तियों की तत्काल मृत्यु हो गई। मृतकों में से अधिकांश मेरे क्षेत्र के ही थे। यह बिहार राज्य की सबसे बड़ी बस दुर्घटना है। जब से इस पुल का निर्माण हुआ है तबसे बस, ट्रक एवं बैलगाड़ी की दुर्घटनाओं की बाढ़ लग गयी है। कोई ऐसा महीना नहीं जाता है जिस महीने में दुर्घटना नहीं होती हो और लोगों की जान नहीं जाती हो। दुर्घटना का सबसे बड़ा कारण यह है कि एक तो अभी तक पुल का एक ही हिस्सा पूरा हो पाया है, दूसरा, दोनों तरफ पुल का रेलिंग इतना कमजोर है कि थोड़ा सा ठोकर लगने के बाद वह टूट कर नीचे गिर जाता है। जो बस या मिनी बस बिहार में चलती है उसमें क्षमता से कई गुने अधिक यात्रियों को चढ़ा लिया जाता है और गति सीमा से अधिक रफ्तार से गाड़ी लापरवाही से चलाई जाती है। पिछले 23 महीनों में 200 से अधिक लोगों की जानें जा चुकी हैं। बिहार सरकार द्वारा मृतक परिवारों को जो राशि दी जाती रही है वह नगण्य है।

अतः केन्द्र सरकार से मांग है कि अधूरे पुल को अविलम्ब पूरा करें, दोनों तरफ के रेलिंग को मजबूत किया जाय, क्षमता से अधिक यात्रियों को ढोने वाले एवं गति सीमा से अधिक चलाने वाले वाहनों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही की जाय एवं प्रत्येक मृतक परिवारों को समुचित मुआवजा दिया जाय।

*Original speech was delivered in Oriya.